आत्मत्राण

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.
'आत्मत्राण' कविता में कवि किससे और क्या प्रार्थना करता है?

Answer:
'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है। वह कामना करता है कि भले ही ईश्वर उसे दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, परंतु वह अपने प्रभु से इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके। वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है। वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करता है, प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी के साथ वहन कर सके। कवि चाहता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

दीर्घ उत्तरी प्रश्न

Question 2.
'आत्मत्राण' कविता में कवि की प्रार्थना से क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए।
Answer:
'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि मानव मात्र को संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर से दु:खों से छुटकारा पाने की बजाए उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए। मनुष्य को कभी भी विषम परिस्थितियों को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अगर हानि भी उठानी पड़े तो मन में रोष नहीं करना चाहिए। कवि ईश्वर से संकट के समय भय निवारण करने की शक्ति प्रदान करने को कहते हैं। कविता के माध्यम से कवि आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश तो देते ही हैं साथ ही यह भी सीख देते हैं कि मनुष्य को सुख के क्षणों में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, उसे याद करके उसके समक्ष विनय भाव प्रकट करना चाहिए। उससे निडरता, शक्ति और आस्था का वरदान लेना चाहिए। अगर दुख में कोई सहायक न मिले तो भी मनुष्य को अपना बल-पौरुष नहीं डगमगाना चाहिए तथा ऐसी स्थिति में भी प्रभु पर से विश्वास कम नहीं होना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 3.

'आत्मत्राण' कविता में किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात कवि क्यों कहता है? कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'आत्मत्राण' कविता में कवि सहायक पर निर्भर न रहने की बात कहता है क्योंकि वह आत्मविश्वासी है। वह आत्मनिर्भर बनकर अपने बल-पौरुष के बल पर विपदाओं को चुनौती देने में विश्वास करता है।

वह अपने प्रभु से यही प्रार्थना करता है कि भले ही ईश्वर उसकी दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, पर इतना अवश्य कर दे कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं, इन पर विजय प्राप्त कर सके। कवि प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता है। वह चाहता है कि प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी से वहन कर सके। कवि कामना करता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

2015
दीर्घ उत्तरी प्रश्न

Question 4.

'आत्मत्राण' कविता के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है? उसका संदेश स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि मानव मात्र को संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर से दुःखों से छुटकारा पाने की बजाए उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए। मनुष्य को कभी भी विषम परिस्थितियों को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अगर हानि भी उठानी पड़े तो मन में रोष नहीं करना चाहिए। कवि ईश्वर से संकट के समय भय निवारण करने की शक्ति प्रदान करने को कहते हैं। कविता के माध्यम से कवि आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश तो देते ही हैं साथ ही यह भी सीख देते हैं कि मनुष्य को सुख के क्षणों में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, उसे याद करके उसके समक्ष विनय भाव प्रकट करना चाहिए। उससे निडरता, शक्ति और आस्था का वरदान लेना चाहिए। अगर दुख में कोई सहायक न मिले तो भी मनुष्य को अपना बल-पौरुष नहीं डगमगाना चाहिए तथा ऐसी स्थिति में भी प्रभु पर से विश्वास कम नहीं होना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

'आत्मत्राण' कविता की पंक्ति 'तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में' का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इस काव्य पंक्ति द्वारा कवि रवींद्रनाथ ठाकुर कहना चाहते हैं कि वे सुख के दिनों में भी प्रभु का स्मरण बनाए रखना चाहते हैं, जबकि सामान्य व्यक्ति दुख की घड़ी में ही परमात्मा का स्मरण करते हैं और सुख प्राप्त होने पर ईश्वर को भूल जाते हैं। कवि सुख-दुख को समभाव से वहन करने हेतु ईश्वर की कृपा दृष्टि चाहते हैं।

Question 6.

'आत्मत्राण' कविता में कवि की क्या कामनाएँ हैं? अपने शब्दों में संक्षेप में लिखिए।

Answer:

'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से यह कामना करता है कि वह उसे दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में भले ही मदद न करे, पर वह इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके। वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है, वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता है। प्रभु उसे इतना निर्भय बना दें कि वह जीवन में उत्तरदायित्वों के भार को आसानी के साथ वहन कर सके। कवि कामना करता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 7.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा मैं पाऊँ भय।
दु:ख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही ॥
तो भी मन में ना मानूँ क्षय ॥

(*i*) **कवि की प्रार्थना क्या है?**
(क) विपदाओं से बचाने की
(ख) विपदा नहीं देने की
(ग) विपदाओं से नहीं डरने की
(घ) विपदाओं से लड़ने की

(*ii*) **दुख से पीड़ित होने पर कवि क्या चाहता है?**
(क) दुख दूर करने का उपाय
(ख) दुखों को जीत सकने का वरदान
(ग) सुख मिलते रहने का वरदान
(घ) दुख सहने की शक्ति

(*iii*) **सहायक न मिलने पर कवि क्या चाहता है?**
(क) सांत्वना मिलती रहे
(ख) वह अकेला न रहे
(ग) बल-पौरुष कम न हो
(घ) दुख को सहता रहे

(*iv*) **'करुणामय' शब्द का अर्थ है**
(क) करुणा करने वाला
(ख) करुणा से ओतप्रोत
(ग) करुणा का पुतला
(घ) करुणा का अवतार

(*v*) **कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?**
(क) विपत्तियाँ सहनी चाहिए
(ख) ईश्वर की प्रार्थना करते रहना चाहिए
(ग) मानव को स्वयं पर भरोसा होना चाहिए
(घ) आत्मबल की रक्षा करनी चाहिए

Answer:
(*i*) (ग) विपदाओं से नहीं डरने की
(*ii*) (ख) दुखों को जीत सकने का वरदान
(*iii*) (ग) बल-पौरुष कम न हो
(*iv*) (ख) करुणा से ओतप्रोत
(*v*) (ग) मानव को स्वयं पर भरोसा होना चाहिए

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.
'आत्मत्राण' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि मानव मात्र को संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर से दुःखों से छुटकारा पाने की बजाए उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए। मनुष्य को कभी भी विषम परिस्थितियों को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अगर हानि भी उठानी पड़े तो मन में रोष नहीं करना चाहिए। कवि ईश्वर से संकट के समय भय निवारण करने की शक्ति प्रदान करने को कहते हैं। कविता के माध्यम से कवि आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश तो देते ही हैं साथ ही यह भी सीख देते हैं कि मनुष्य को सुख के क्षणों में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, उसे याद करके उसके समक्ष विनय भाव प्रकट करना चाहिए। उससे निडरता, शक्ति और आस्था का वरदान लेना चाहिए। अगर दुख में कोई सहायक न मिले तो भी मनुष्य को अपना बल-पौरुष नहीं डगमगाना चाहिए तथा ऐसी स्थिति में भी प्रभु पर से विश्वास कम नहीं होना चाहिए।

Question 9.

'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने से क्या अपेक्षा करता है?

Answer:

'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने से यह अपेक्षा करता है कि ऐसे समय में प्रभु उसे इतना संयम, विवेक व धैर्य प्रदान करें कि वह उनके अस्तित्व पर ज़रा-सा भी संदेह न करे अर्थात उसके मन में प्रभु के प्रति पहले के समान श्रद्धा बनी रहे।

Question 10.

'आत्मत्राण' कविता में कवि यह क्यों नहीं चाहता कि प्रभु ही उसकी विपत्तियों को दूर करें?

Answer:

'आत्मत्राण' कविता का कवि यह जानता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और सबकुछ करने में समर्थ है, तथापि वह उनसे अपने जीवन की विपत्तियों को दूर करने का अनुरोध नहीं करता, बल्कि उनसे निर्भयता, आत्मबल, संयम व विवेक जैसे गुण माँगता है, ताकि जीवन में आने वाली विपत्तियों का सामना स्वयं करके वह उन्हें अपने अनुकूल बना सके।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 11.
'आत्मत्राण' कविता में कवि क्या प्रार्थना करता है? उसे अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:
'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है। वह कामना करता है कि भले ही ईश्वर उसे दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, परंतु वह अपने प्रभु से इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके। वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है। वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करता है, प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी के साथ वहन कर सके। कवि चाहता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

Question 12.
'आत्मत्राण' कविता में किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात क्यों कही गई है?

Answer:
'आत्मत्राण' कविता में कवि सहायक पर निर्भर न रहने की बात कहता है क्योंकि वह आत्मविश्वासी है। वह आत्मनिर्भर बनकर अपने बल-पौरुष के बल पर विपदाओं को चुनौती देने में विश्वास करता है।

वह अपने प्रभु से यही प्रार्थना करता है कि भले ही ईश्वर उसकी दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, पर इतना अवश्य कर दे कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं, इन पर विजय प्राप्त कर सके। कवि प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता है। वह चाहता है कि प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी से वहन कर सके। कवि कामना करता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

Question 13.
"विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं"– कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर इस काव्य-पंक्ति द्वारा क्या कहना चाहते हैं?

Answer:
कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने आत्मत्राण कविता में ऐसा इसलिए कहा है कि वे विपदाओं का सामना धैर्य व साहसपूर्वक करना चाहते हैं। वे आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं। वे निडर होकर ईश्वर से कहते हैं कि ईश्वर भले ही उन्हें विपदाओं से न बचाए, परंतु विपदाओं से लड़ने की उन्हें शक्ति दे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 14.

निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तरों वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

दु:ख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल-पौरुष न हिले
हानि उठानी पड़े जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।

(i) दुखी चित्त को क्या नहीं देने की प्रार्थना की गई है?

(क) सांत्वना देने की
(ख) दुख दूर करने की
(ग) सुख प्रदान करने की
(घ) दुख पर विजय प्राप्त करने की

(ii) कवि ने 'अपना बल-पौरुष न हिले' क्यों कहा है?

(क) किसी की सहायता के द्वारा दुखों से लड़ना चाहता है।
(ख) अपने बल-पराक्रम से दुखों से लड़ना चाहता है।
(ग) अपने बल-पराक्रम से संसार के दुख दूर करना चाहता है।
(घ) अपने बल-पराक्रम का परिचय देना चाहता है।

(iii) 'लाभ अगर वंचना रही' का तात्पर्य है–

(क) लाभ होने की स्थिति में
(ख) लाभ मिलकर हानि हो जाने की स्थिति में
(ग) लाभ न मिलने की स्थिति में
(घ) लाभ के लिए प्रयास करने की स्थिति में

(iv) 'क्षय' शब्द से कवि क्या कहना चाहता है?

(क) सुख
(ख) प्रसन्नता
(ग) दुख
(घ) सांत्वना

(v) कवि ने ईश्वर से क्या चाहा है?

(क) व्यथित चित्त की शांति
(ख) बल और आत्मसम्मान
(ग) दुख झेलने के लिए सहायता
(घ) हानि-लाभ की चिंता न करना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(*i*) (क) सांत्वना देने की

(*ii*) (ख) अपने बल-पराक्रम से दुखों से लड़ना चाहता है

(*iii*) (ग) लाभ न मिलने की स्थिति में

(*iv*) (ग) दुख

(*v*) (ख) बल और आत्मसम्मान

Question 15.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से ढूँढ़कर उत्तर लिखिए–

नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दु:ख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही।
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय ॥

(*i*) **कवि सुख के दिनों में क्या कामना करता है?**

(क) वह ईश्वर को न भूलने की कामना करता है।

(ख) वह ईश्वर की आवश्यकता न समझे।

(ग) वह सुख के क्षणों को बनाए रखे

(घ) वह हर क्षण सुख का भोग करे

(*ii*) **'नतशिर होकर सुख के दिन में'– का आशय है**

(क) सुख के दिनों में घमंड न करे

(ख) सुख के दिनों में चंचल न हो

(ग) सुख के दिनों में किसी प्रकार का अहं भाव न हो।

(घ) सुख के दिनों में विनय-भाव धारण करे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*iii*) "निखिल मही" से यहाँ तात्पर्य है

(क) कवि के सगे-संबंधी (ख) पृथ्वी के अन्य प्राणी

(ग) संपूर्ण संसार (घ) उसके अपने कर्म

(*iv*) दुख के दिनों में कवि क्या चाहता है?

(क) उसे जीवन में निराशा न हो

(ख) वह अपने पौरुष से दुखों से संघर्ष करे

(ग) उसे परमात्मा की दयालुता पर कोई संदेह/संशय न हो।

(घ) वह दुख में भी विनय-भाव को न छोड़े

(*v*) प्रस्तुत काव्यांश से कौन-सा भाव सर्वाधिक पुष्ट होता है?

(क) करुणा (ख) दया

(ग) विनय (घ) आत्मविश्वास

Answer:

(*i*) (क) वह ईश्वर को न भूलने की कामना करता है।

(*ii*) (ग) सुख के दिनों में किसी प्रकार का अहम् भाव न हो।

(*iii*) (ग) संपूर्ण संसार

(*iv*) (ग) उसे परमात्मा की दयालुता पर कोई संदेह/संशय न हो।

(*v*) (ग) विनय

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 16.

"आत्मत्राण" कविता क्या संदेश देती है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि मानव मात्र को संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर से दुःखों से छुटकारा पाने की बजाए उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए। मनुष्य को कभी भी विषम परिस्थितियों को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अगर हानि भी उठानी पड़े तो मन में रोष नहीं करना चाहिए। कवि ईश्वर से संकट के समय भय निवारण करने की शक्ति प्रदान करने को कहते हैं। कविता के माध्यम से कवि आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश तो देते ही हैं साथ ही यह भी सीख देते हैं कि मनुष्य को सुख के क्षणों में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, उसे याद करके उसके समक्ष विनय भाव प्रकट करना चाहिए। उससे निडरता, शक्ति और आस्था का वरदान लेना चाहिए। अगर दुख में कोई सहायक न मिले तो भी मनुष्य को अपना बल-पौरुष नहीं डगमगाना चाहिए तथा ऐसी स्थिति में भी प्रभु पर से विश्वास कम नहीं होना चाहिए।

Question 17.

"आत्मत्राण" कविता में कवि ने ईश्वर से क्या प्रार्थना की है?

Answer:

'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है। वह कामना करता है कि भले ही ईश्वर उसे दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, परंतु वह अपने प्रभु से इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके। वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है। वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करता है, प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी के साथ वहन कर सके। कवि चाहता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 18.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय–
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय॥

(i) कवि क्या चाहता है?

(क) भार हलका करना
(ख) सांत्वना
(ग) निर्भीकता
(घ) भार वहन करने की शक्ति

(ii) 'नत शिर' का आशय है–

(क) झुककर
(ख) सिर ऊँचा करके
(ग) अहंकार से
(घ) विनम्रता से

(iii) दुखों से घिर जाने पर भी कवि क्या चाहता है?

(क) ईश्वर के प्रति अविश्वास
(ख) ईश्वर के प्रति संदेह
(ग) ईश्वर के प्रति कृतज्ञता
(घ) ईश्वर के प्रति शिकायत

(iv) "तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में" से कवि का क्या भाव है?

(क) दुख के दिनों में पल-पल ईश्वर को याद करता रहूँ।
(ख) विपत्ति आने पर पल-पल ईश्वर का मुँह ताकूँ।
(ग) सुख के दिनों में भी सदा ईश्वर को याद करता रहूँ।
(घ) सुख के दिनों में ईश्वर को भूल जाया करूँ।

(v) "करुणामय" का आशय है–

(क) करुणापूर्ण
(ख) करुणासहित
(ग) करुणारहित
(घ) करुणाकारी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(*i*) (घ) भार वहन करने की शक्ति

(*ii*) (घ) विनम्रता से

(*iii*) (ग) ईश्वर के प्रति कृतज्ञता

(*iv*) (ग) सुख के दिनों में भी सदा ईश्वर को याद करता रहूँ।

(*v*) (क) करुणापूर्ण

Question 19.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं,
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल-पौरुष न हिले॥

(*i*) **कवि विपत्ति आने पर ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है?**

(क) विपत्ति को दूर करने की
(ख) विपत्तियों से न डरने की
(ग) विपत्तियों को सह लेने की
(घ) विपत्तियों से दुखी न होने की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*ii*) दुख से पीड़ित चित्त में कवि क्या चाहता है?

(क) दुखों से दूर रहने का अवसर
(ख) दुखों से निराश हो जाने का अवसर
(ग) दुखों को सहने की शक्ति
(घ) दुखों को जीत सकने का साहस

(*iii*) दुख में कोई सहायक न मिलने पर कवि की क्या प्रार्थना है?

(क) उसका बल-पराक्रम कम न हो
(ख) उसके मित्र उसकी सहायता करें
(ग) ईश्वर उसकी रक्षा करे
(घ) वह किसी से सहायता न माँगे

(*iv*) सहायता न माँगकर ईश्वर से 'करुणा का सहारा' माँगना कवि के किस भाव का सूचक है?

(क) हठ
(ख) आत्मविश्वास
(ग) क्षमता
(घ) दैन्य

(*v*) कवि को ईश्वर के किस भाव पर भरोसा है?

(क) शक्ति
(ख) सहानुभूति
(ग) सहायता
(घ) करुणा

Answer:

(*i*) (ख) विपत्तियों से न डरने की
(*ii*) (घ) दुखों को जीत सकने का साहस
(*iii*) (क) उसका बल-पराक्रम कम न हो
(*iv*) (ख) आत्मविश्वास
(*v*) (घ) करुणा

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 20.

'विपदाओं से मुझे बचाओ यह मेरी प्रार्थना नहीं' इस पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है? 'आत्मत्राण' कविता के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'विपदाओं से मुझे बचाओ यह मेरी प्रार्थना नहीं' पंक्ति से कवि का तात्पर्य यह है कि वह ईश्वर से यह विनती नहीं करना चाहता कि वे उसके संकटों से उसे बचाए रखें। वह तो मात्र यह चाहता है कि प्रभु उसे ऐसा आंतरिक बल दें कि वह किसी भी कठिन समय में विचलित न हो। प्रभु उसे सहनशीलता, धैर्य तथा बल अवश्य प्रदान करें, ताकि वह किसी भी कष्ट और संकट से उबर पाए उसे सहन कर पाए। किसी भी परिस्थिति में उसका मन विचलित न हो। कठिन-से-कठिन समय में भी, ईश्वर के प्रति उसके विश्वास और श्रद्धा में कमी न आए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in